

Padma Shri



DR. VIJAYKUMAR VINAYAK DONGRE

Dr. Vijay Kumar Vinayak Dongre is the President of the Voluntary Health Association of India, which is a confederation of 27 states voluntary state associations, linking together more than 4500 health and development institutions across the country. He is recognized for the implementation of Survey, Education and Treatment program of anti-leprosy work across India along with rehabilitation of leprosy patients. He was instrumental in raising the voice and the process of repealing outdated acts violating the Human rights of leprosy patients.

2. Born on 29th September 1939, Dr. Vijay received his Graduate of Faculty of Ayurvedic Medicine degree from Poddar Ayurvedic college, Mumbai in 1967. He joined Acworth Leprosy Hospital, Wadela, Mumbai in 1963 and worked there for 34 years in various capacities. He completed his MBBS, DVD, DSW, DHE, PGD PR&A and PGD MIS while working to gain additional knowledge to address the medical, social and legal aspects of leprosy patients. He wrote about 60 books in Marathi and English addressing serious aspects of Leprosy. They were written in a lucid language and distributed all over India free of cost. It created so much awareness that some of the books were translated in about nineteen regional languages. One of the books is recognized by the Government of India as the training manual for doctors and paramedical workers. He founded Bombay Leprosy Project and Acworth leprosy hospitality society for Research Rehabilitation and Education in Leprosy to deal with the problem beyond the hospital premises. He worked as an honorary secretary for HKNS (Hind Kushta Nivaran Sangh, MB), NLO (National Leprosy Organization), IAL (Indian Association Of Leprologists), SEL (The Society for the eradication Of Leprosy), ILU (International Leprosy Union).

3. In 1997, Dr. Vijay assumed position as the Director of Gandhi Memorial Leprosy Foundation, Wardha. He worked in the remote rural areas of Vidarbha and carried out Survey, Education and Treatment pattern reaching out to the remotest villages in the region. He started a general outpatient department in a Leprosy Hospital which was unique concept and a step towards the integration of anti-leprosy work with other medical services.

4. In 1998, Dr. Vijay was elected as the President of Voluntary Health Association of India (VHAI), New Delhi. The rehabilitation work he and his team from VHAI carried out in the super cyclone hit Odisha, earthquake hit Bhuj and Tsunami hit south Indian region received praise from the Prime Minister's office and the British Council of Incite, giving them additional aid to rehabilitate the villages. He was associated with ALERT India (Association for Leprosy Education, Rehabilitation and Treatment) from 2003-2013.

5. Dr. Vijay has received awards from various medical and non medical organizations, including, International Gandhi Award, at the hands of The Hon'ble President of India in 2014 and Life time achievement award by the Indian Association of Leprologists.

पद्म श्री



डॉ. विजयकुमार विनायक डोंगरे

डॉ. विजय कुमार विनायक डोंगरे जी भारत के स्वैच्छिक स्वास्थ्य संघ के अध्यक्ष हैं जो 27 राज्यों के स्वैच्छिक राज्य संघों का महा संघ है, जिसके साथ देशभर के 4500 से अधिक स्वास्थ्य और विकास संस्थान जुड़े हैं। वे कुष्ठ रोगियों के पुनर्वास के साथ-साथ कुष्ठ रोग के सर्वेक्षण, शिक्षा और उपचार कार्यक्रम के कार्यान्वयन के लिए जाने जाते हैं। उन्होंने कुष्ठ रोगियों के मानवाधिकारों का उल्लंघन करने वाले पुराने कानूनों के खिलाफ आवाज उठाने और उनको निरस्त करने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

2. 29 सितंबर, 1939 को जन्मे डॉ. विजय ने 1967 में पोद्दार आयुर्वेदिक कॉलेज, मुंबई से आयुर्वेदिक चिकित्सा संकाय में स्नातक की उपाधि प्राप्त की। उन्होंने 1963 में एकवर्ष कुष्ठ अस्पताल, वडेला, मुंबई में प्रवेश लिया और वहां विभिन्न पदों पर रहते हुए 34 वर्षों तक काम किया। उन्होंने कुष्ठ रोगियों की चिकित्सा, सामाजिक और कानूनी पहलुओं पर प्रकाश डालने के लिए अतिरिक्त ज्ञान प्राप्त करने के लिए काम करते हुए अपना एमबीबीएस, डीवीडी, डीएसडब्ल्यू, डीएचई, पीजीडी पीआर एंड ए और पीजीडी एमआईएस भी पूरा किया। उन्होंने कुष्ठ रोग के गंभीर पहलुओं के संबंध में मराठी और अंग्रेजी में लगभग 60 पुस्तकें लिखीं। ये किताबें बहुत सरल भाषा में लिखी गई हैं और इन्हें पूरे भारत में मुफ्त में वितरित किया गया था। इन पुस्तकों ने इतनी जागरूकता पैदा की कि कुछ पुस्तकों का लगभग उन्नीस क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद किया गया। इन पुस्तकों में से एक को भारत सरकार द्वारा डॉक्टरों और पैरामेडिकल कर्मचारियों के लिए प्रशिक्षण नियमावली के रूप में मान्यता प्राप्त है। उन्होंने अस्पताल की चारदीवारी से परे समस्या से निपटने के लिए कुष्ठ रोग के संबंध में अनुसंधान पुनर्वास और शिक्षा के लिए बॉम्बे लेप्रोसी प्रोजेक्ट और एकवर्ष लेप्रोसी हॉस्पिटैलिटी सोसाइटी की स्थापना की। उन्होंने एचकेएनएस (हिन्द कुष्ठ निवारण संघ, एमबी), एनएलओ (नेशनल लेप्रोसी ऑर्गनाइजेशन), आईएएल (इंडियन एसोसिएशन ऑफ लेप्रोलॉजिस्ट), एसईएल (द सोसाइटी फॉर द इरेडिकेशन ऑफ लेप्रोसी), आईएलयू (इंटरनेशनल लेप्रोसी यूनियन) के मानद सचिव के रूप में काम किया।

3. वर्ष 1997 में, डॉ. विजय ने गांधी मेमोरियल लेप्रोसी फाउंडेशन, वर्धा के निदेशक के रूप में पद भार ग्रहण किया। उन्होंने विदर्भ के सुदूर ग्रामीण इलाकों में काम किया और हमारे सर्वेक्षण, शिक्षा और उपचार के पैटर्न को क्षेत्र के सबसे दूर के गांवों तक पहुंचाया। उन्होंने एक कुष्ठ अस्पताल में एक सामान्य आउटपैशेंट विभाग शुरू किया जो अनूठी अवधारणा थी और कुष्ठ रोग रोधी कार्य को अन्य चिकित्सा सेवाओं के साथ जोड़ने की दिशा में एक बड़ा कदम था।

4. 1998 में, डॉ. विजय को वोलेंट्री हेल्थ एसोसिएशन ऑफ इंडिया (वीएचएआई) नई दिल्ली के अध्यक्ष के रूप में चुना गया था। भयानक चक्रवात से प्रभावित ओडिशा, भूकंप प्रभावित भुज और सुनामी प्रभावित दक्षिण भारतीय क्षेत्र में वीएचएआई और उनकी टीम के द्वारा किए गए पुनर्वास कार्य को प्रधानमंत्री कार्यालय और ब्रिटिश काउंसिल ऑफ इंडिया से प्रशंसा मिली, जिससे उन्हें गांवों के पुनर्वास के लिए अतिरिक्त सहायता मिली। ये 2003–2013 तक अलर्ट इंडिया (एसोसिएशन फॉर लेप्रोसी एजुकेशन, रीहैबिलिटेशन एंड ट्रीटमेंट) से जुड़े रहे।

5. डॉ. विजय को विभिन्न चिकित्सा और गैर-चिकित्सा संगठनों से पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें 2014 में भारत के माननीय राष्ट्रपति के हाथों अंतरराष्ट्रीय गांधी पुरस्कार और इंडियन एसोसिएशन ऑफ लेप्रोलॉजिस्ट द्वारा लाइफ टाइम अचीवमेंट अवार्ड भी शामिल हैं।